D.ed. – 19-21

पढ़ना सीखने सिखाने की प्रक्रिया में बाल साहित्य की भूमिका :

पढ़ना सीखने सिखाने की प्रक्रिया में बाल साहित्य की अहम भूमिका है। बाल साहित्य का आशय उस साहित्य से है जो कि स्तर विशेष के बालकों के लिये संकलित किया जाता है। सामान्य रूप से संकलित साहित्य समान विधाओं से संबंधित होता है। संकलित साहित्य का आशय उन सभी विधाओं से है, जो कि बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु स्तरानुकूल पाठ्यक्रम के रूप में संकलित की जाती है।

सामान्य रूप से यह देखा जाता है कि प्रत्येक काल के मूल में एक निश्चित व्यवस्था एवं उद्देश्यों का समावेश होता है। इसके साथ-साथ हमारी प्रत्येक वस्तु को पाठ्यक्रम के महत्वपूर्ण अंग के रूप में उस स्थिति में ही स्वीकार किया जाता है जब वह बालकों के लिये उपयोगी एवं आवश्यक सिद्ध होती है। बाल साहित्य के उद्देश्य आवश्यकता एवं महत्व को निम्नलिखित रूप में स्वीकार किया जाता है।

(i) रुचिपूर्ण भाषायी सामग्री प्रदान करना।

(ii) स्तरानुकूल भाषा सामग्री उपलब्ध कराना।

(iii) विविध विधाओं से परिचय कराना।

Scanned with CamScanner

(iv) मानसिक ज्ञान प्रदान करना।

(v) स्वस्थ मनोरंजन।

(vi) विभिन्न प्रकार की शिक्षाएँ प्रदान करना।

(vii) स्वाध्याय का विकास।

(viii) सर्वांगीण विकास का आधार।

संकलित साहित्य से संबंधित सभी तथ्य छात्रों को सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भौतिक विकास की ओर अग्रसर करते हैं। इस प्रकार संकलित ज्ञान साहित्य में सर्वांगीण विकास का साहित्य छिपा होता है।

S. Kum